राजा मिडास
और सोने का स्पर्श

लेखनः एल पार्किन्स

चित्रः हैग व रेजीना शैकरजीन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



राजा मिदास और सोने का स्पर्श



लेखनः एल पार्किन्स

चित्रः हैग व रेजीना शैकरजीन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



राजा मिदास को सोने से प्यार था।
वह सोने से बने पलंग पर सोता था।
अपनी नील चिरैया को सोने के पिंजड़े में रखता था।
हर सुबह नील चिरैया
उसे जगाने के लिए गाती थी।

हर सुबह राजा अपना सोने से बना ताज पहनता।
अपनी बेटी राजकुमारी मेरीगोल्ड
के साथ सुबह का
नाश्ता करने बैठता था।

वे शाही अंगूर का रस पीते।
वे शाही सॉसेज खाते।
वे सोने के प्यालों से पीते।
और सोने के थालों में खाते।









नाश्ते के बाद राजा अपने
शाही सुनारों से मिलने जाता।
उसके शाही सुनार उसके लिए
सोने की घड़ियाँ और सोने की मेज़ें बनाते।
और तो और वे मछलियाँ पकड़ने के लिए
सोने के कांटे तक बनाते।

हर सुबह राजा घोड़े पर सवार हो निकलता।
वह अपने राज्य में चारों ओर
सोने की तलाश में घूमता।
तब वह उस सोने को
अपने महल में ले जाता।

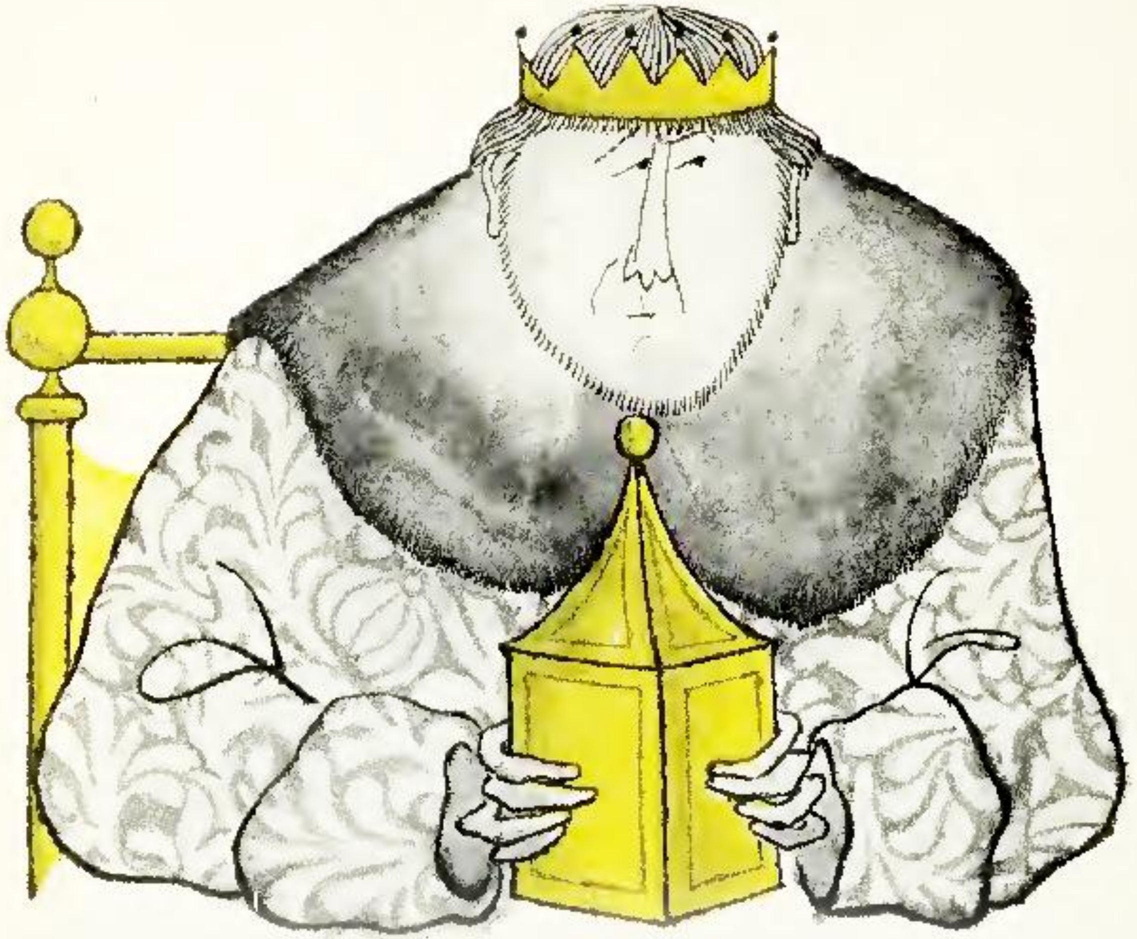
महल में उसके सेवक
सोने को नीचे ले जाते
राजा एक खुफ़िया दरवाज़ा खोलता।

सेवक सारा सोना एक
बड़ी अंधेरी गुफ़ा में रखते।
वह गुफ़ा सोने से अटी पड़ी थी।

हर दिन राजा मिदास
खुद को गुफ़ा में बन्द कर लेता।
“सोना!” वह कहता।
“उसकी छुअन मुझे बेहद पसन्द है।”

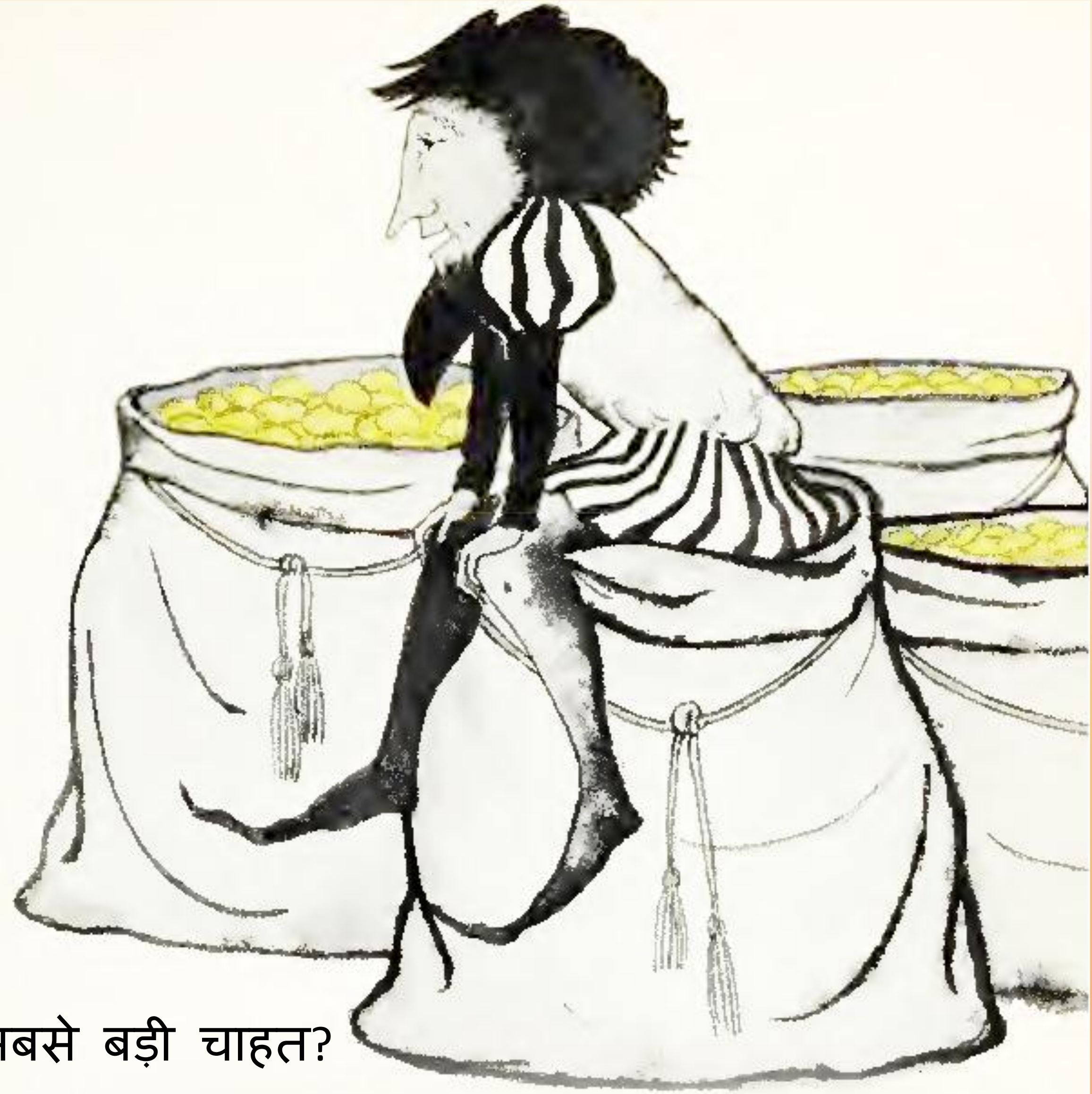
“सोना! सोना! सोना!
किस कदर पसन्द है मुझे मेरा सोना।”





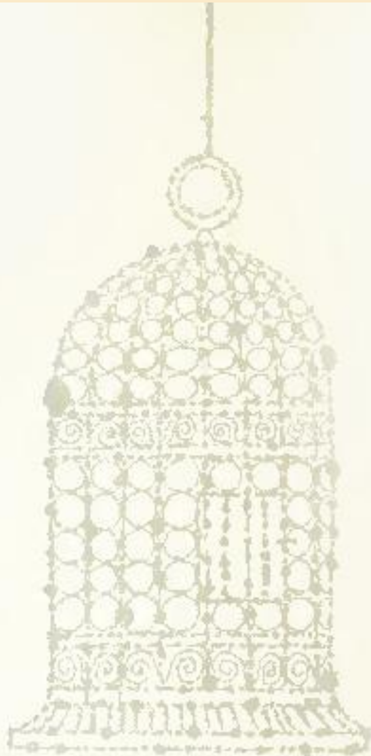
एक दिन राजा अपनी गुफ़ा में था।
उसने एक आवाज़ सुनी। सो उसने ऊपर देखा।
उसे एक विचित्र सा छोटा आदमी नज़र आया।
''तुम यहाँ भला कैसे आए?'' मिदास ने उससे पूछा।

''अरे, मैं तो कुछ भी कर सकता हूँ,''
छोटे आदमी ने कहा।
''बताओ तुम्हारी सबसे बड़ी चाहत क्या है?''



''मेरी सबसे बड़ी चाहत?
बेशक सोना!'' राजा ने कहा।
''मैं चाहता हूँ कि मैं जो कुछ छुंऊं
वह सोने में बदल जाए।''

यह तो बहुत ही बड़ी इच्छा है,''
छोटे आदमी ने कहा।
''पर हो सकता है कि यह तुम्हें असली खुशी न दे।
पर अगर यही तुम्हारी चाहत है . . .



तो मैं तुम्हारी इच्छा को सच करता हूँ।
तुम ऊपर जाओ, और सो जाओ।
कल सुबह तुम जो कुछ छुओगे
वह सोने में बदल जाएगा।''
अचानक एक रोशनी चमकी
और वह छोटा आदमी गायब हो गया।

उस रात राजा मिदास सो ही नहीं सका।
वह पूरी रात सोचता रहा,
''क्या मेरी इच्छा सचमें पूरी होगी?
क्या मेरा स्पर्श सोने का बन जाएगा?''





आखिरकार सूरज उगा।
राजा की नील चिरैया गाने लगी।
राजा उठ बैठा।
उसने नील चिरैया को हाथ बढ़ा छुआ।
नील चिरैया सोने में तब्दील हो गई।

“यह तो सचमें कारगर है।
मेरा स्पर्श सोने का बन गया है।”

उसने अपना शाही कोट और पतलून पहनी।
उसका कोट और उसकी पतलून सोने की बन गई।

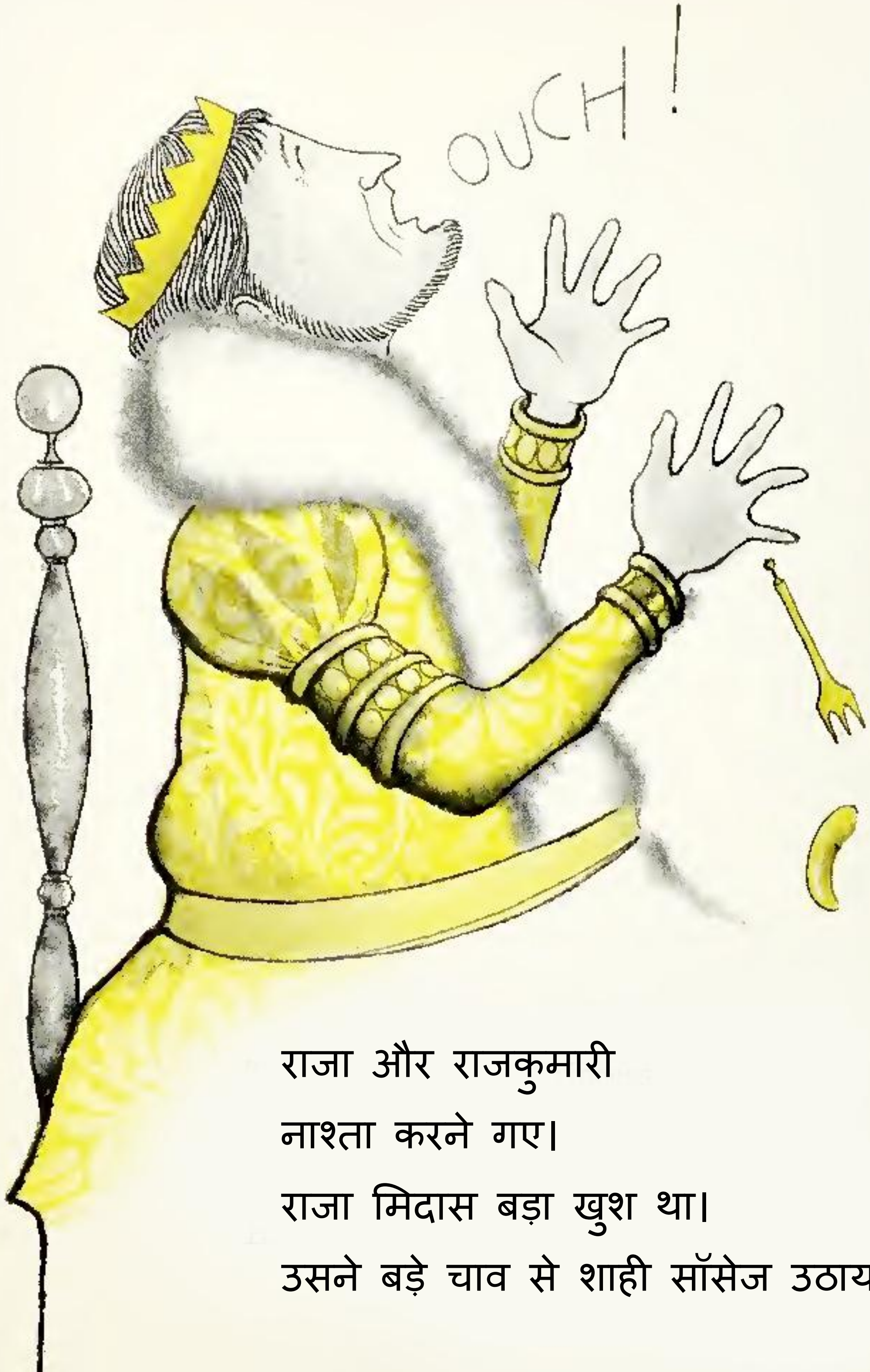
राजा मिदास अपने महल में दौड़ा।
उसने दरवाज़े को सोन में बदला।
कुर्सी को सोने में तब्दील किया।
उसने एक छाते को सोने में बदला।

तब वह बाग की ओर दौड़ा।
वहाँ उसने एक मेंढ़क को सोने में बदला।
उसने लाल गुलाबों को छुआ।
उसने सभी गुलाबों को सोने के गुलाबों में तब्दील कर दिया।

“देखो!” उसने राजकुमारी मेरीगोल्ड से कहा।
“देखो तो, मैं क्या कर सकता हूँ!”

पर मेरीगोल्ड ने कोई जवाब नहीं दिया।
वह सोने के गुलाबों को घूरती रही।
वे कठोर और ठंडे थे।
उनमें कोई खुशबू भी नहीं थी।



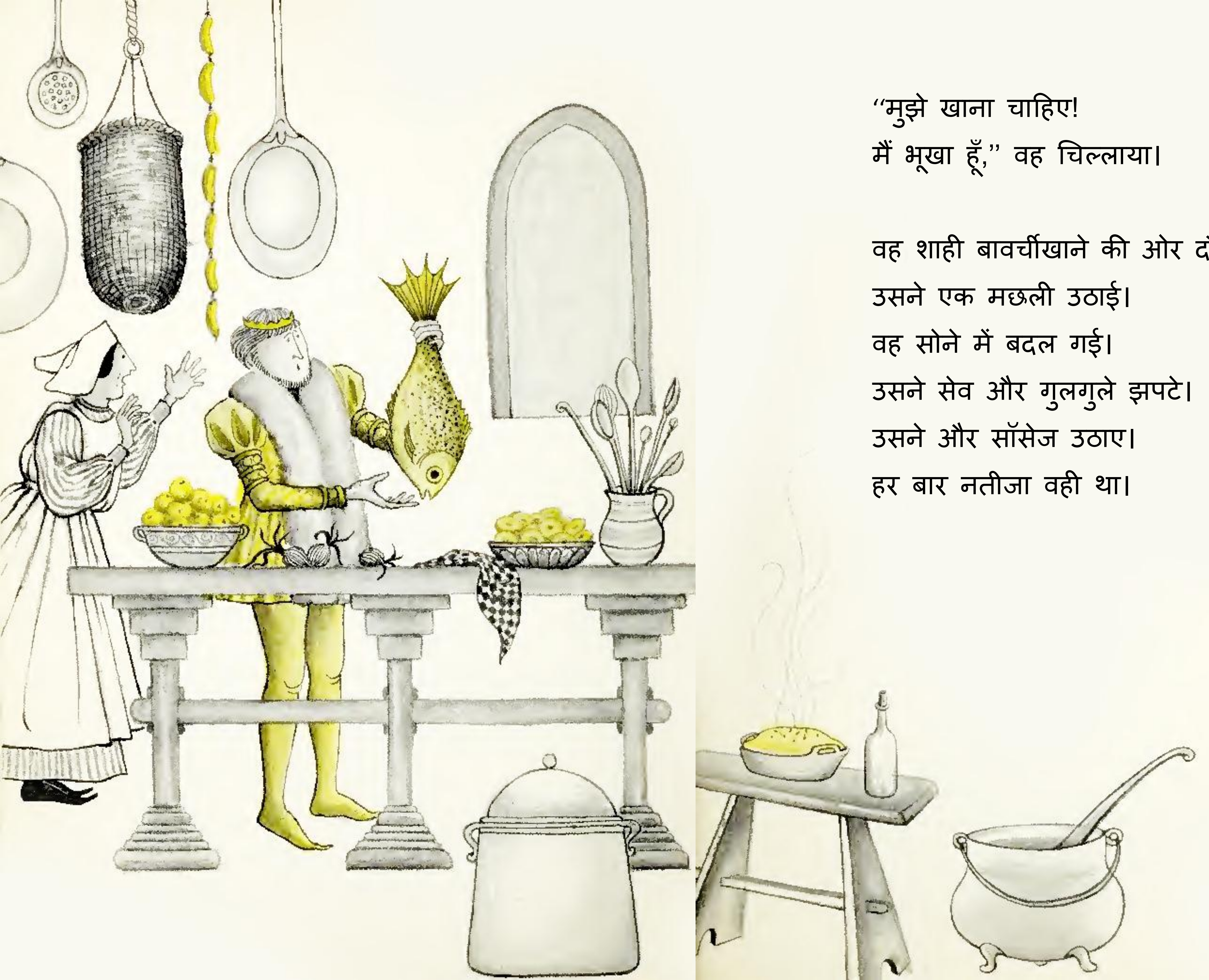


राजा और राजकुमारी
नाश्ता करने गए।
राजा मिदास बड़ा खुश था।
उसने बड़े चाव से शाही सॉसेज उठाया।

"अरे रे!" राजा चीखा।
"मेरा सॉसेज तो सोने का बन गया है!
मैं इसे खा ही नहीं सकता," वह बोला।



उसने अपना हाथ अंगूर के रस की ओर बढ़ाया।
"ओहो!" राजा मिदास ने कहा।
"सोने का अंगूर रस!"



“मुझे खाना चाहिए!
मैं भूखा हूँ,” वह चिल्लाया।

वह शाही बावर्चीखाने की ओर दौड़ा।
उसने एक मछली उठाई।
वह सोने में बदल गई।
उसने सेव और गुलगुले झपटे।
उसने और सॉसेज उठाए।
हर बार नतीजा वही था।

पूरे दिन यही होता रहा।
वह कुछ लिख नहीं सका।
क्योंकि उसकी स्याही सोने में बदल गई।
वह आग नहीं जला पाया।
क्योंकि उसकी लकड़ियाँ सोने में तब्दील हो गईं।

राजा के सारे सेवक भाग गए।
वे ऐसे महल में
काम ही नहीं कर सकते थे।

उस रात राजा ने
अपने दाँत माँजने की कोशिश की।
नहाने की कोशिश की।
पर वह कुछ भी नहीं कर सका।
वह अपने सोने के पलंग पर बैठा
और ज़ार-ज़ार रोने लगा।





राजकुमारी मेरीगोल्ड ने अपने पिता को रोते सुना।
वह भागी हुई पिता के पास आई।
“बेचारे डैडी,” राजकुमारी मेरीगोल्ड बोली।
“आप मेहरबानी से न रोएं।”

वह पिता के पास लपकी,
उसने अपनी बाँहें फैलाईं।



राजा मिदास ने भी अपनी बाँहें फैलाईं।
उसने अपनी लाड़ली को बाहों में भरा।
राजकूमारी मेरीगोल्ड सोने की मूरत
में तब्दील हो गई।



दिनों-दिन राजा मिदास
अपने सोने के महल में,
अपने सोने के सिंहासन पर बैठा,
अपनी ठंड़ी सोने की मूरत बनी बेटी को
ताकता-घूरता रहा।

तब अचानक एक दिन
फिर से रोशनी चमकी।
राजा मिदास ने ऊपर देखा।

वह विचित्र छोटा आदमी वपस नज़र आया।
''राजा मिदास,'' छोटे आदमी ने कहा।

''मैंने सोचा कि मैं तुम्हारी
एक और इच्छा पूरी कर दूँ।
अगर तुम्हें सोने से भी अधिक कुछ
प्यारा लगता हो,
तो तुम उसकी चाहत करो।
पूरे दिल से उसकी चाहत करो!''



राजा मिदास उछल कर खड़ा हो गया।
उसने तहेदिल से चाहत की।
तब अपना हाथ बढ़ाया
और अपनी ठंडी सोने के लड़की को छुआ।

उसकी इच्छा पूरी हो गई थी।
उसकी बेटी सोने की मूरत से
लड़की में तब्दील हो गई!





राजा महल भर में दौड़ा।
राजा ने सब कुछ छुआ।
उसने सब कुछ को बदल कर
वे पहले जैसे थे,
उसमें तब्दील कर दिया।

उसने गुलाबों को छुआ।
उसने मेंढ़क को छुआ।
उसने छतरी को छुआ।
उसने नील चिरैया को छुआ।

आखिर में उसने शाही सॉसेज और
शाही अंगूर के रस को छुआ।

राजा मिदास और राजकुमारी मेरीगोल्ड
नाश्ता करने बैठे।
यह अब तक का सबसे
खुशी भरा नाश्ता था।



"सोना! सोना! सोना!
मुझे सोना बेहद प्यारा है।"
राजा मिदास ने कहा।
"काश मैं जो कुछ छूता
वह सब सोने में तब्दील हो जाता।"

बेचारा राज मिदास,
बदकिस्मती से उसकी इच्छा पूरी हो गई।

